

गणपत मङ्गलार्चना

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ཨོཾ། རྒྱལ་པོ་
ཉལ་འཁོར་ལྡན་པའི་ཡུལ་།
ཅན་པར་འཁོར་པའི་ཡུལ་། ཨོཾ།
པཱཱྡྷཱལ་ལྡན་པའི་ཡུལ་། ཨོཾ།



ཨོཾ། རྒྱལ་པོ་འཁོར་པའི་ཡུལ་།
ཉལ་འཁོར་ལྡན་པའི་ཡུལ་།
ཅན་པར་འཁོར་པའི་ཡུལ་། ཨོཾ།
པཱཱྡྷཱལ་ལྡན་པའི་ཡུལ་། ཨོཾ།



བུར་གཏོང་ནས་ཀྱུ་པ་པའི་གཞན་ཆེན་རྣམས་ལ་མེ་ཁྱིམ་ཆོས་ཀྱི་འཇམ་པོ་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་། གཞུ་བུ་
གཏིན་པོའི་སྐབས་ཀྱི་གཞན་ཆེན་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ།
སེམས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ།
མེ་ཁྱིམ་ཆོས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ།
གསལ་བྱེད་པ། ཇི་ལ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ།
ཆེན་ཆེན་པོ་ཆོས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མའི་དུས་ཀྱི་དུང་དང་པོ་ཡིན་ཏེ།

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

5/25/21

五

5

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

292

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

५५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 श्रीमद्भगवद्गीता ॥ अध्यायः प्रथमः ॥
 अर्जुनस्य सन्निधौ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता
 युयुत्सवः मामकाः पाण्डवाश्चैव ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

五

अनुच्छेद

全

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवाः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदपुत्रः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ २ ॥
 विक्रान्तः शैब्यश्चैव द्रुपदश्चैव ययानुजः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ ३ ॥
 विक्रान्तः शैब्यश्चैव द्रुपदश्चैव ययानुजः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ ४ ॥
 विक्रान्तः शैब्यश्चैव द्रुपदश्चैव ययानुजः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ ५ ॥
 विक्रान्तः शैब्यश्चैव द्रुपदश्चैव ययानुजः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ ६ ॥
 विक्रान्तः शैब्यश्चैव द्रुपदश्चैव ययानुजः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ ७ ॥
 विक्रान्तः शैब्यश्चैव द्रुपदश्चैव ययानुजः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ ८ ॥
 विक्रान्तः शैब्यश्चैव द्रुपदश्चैव ययानुजः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ ९ ॥
 विक्रान्तः शैब्यश्चैव द्रुपदश्चैव ययानुजः ॥
 धृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चैव भीमार्जुनसमा ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ཨོ། །སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་། །སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་། །
 ཨོ། །སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་། །སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་། །
 ཨོ། །སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་། །སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་། །
 ཨོ། །སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་། །སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་དཔལ་ཏེ་བཀའ་སྒྲིག་པོ་། །

